संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत कथा PDF

एक बार भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के विवाह की तैयारी चल रही थी, जिसमें सभी देवताओं को आमंत्रित किया गया था, लेकिन विघ्नहर्ता गणेश जी को निमंत्रण नहीं भेजा गया था। सभी देवता अपनी–अपनी पत्नियों के साथ विवाह में आए लेकिन गणेश जी को उपस्थित न देखकर देवताओं ने भगवान विष्णु से इसका कारण पूछा।

उन्होंने कहा कि उन्होंने भगवान शिव और पार्वती को निमंत्रण भेजा है, गणेश जी चाहें तो अपने माता–पिता के साथ आ सकते हैं। हालांकि उन्हें दिन भर में सवा मूंग, सवा चावल, सवा घी और सवा लड्डू चाहिए। वे न आएं तो कोई बात नहीं। दूसरे के घर जाकर इतना खाना–पीना अच्छा भी नहीं लगता। इस दौरान किसी देवता ने कहा कि अगर गणेश जी आ जाएं तो उन्हें घर संभालने की जिम्मेदारी दी जा सकती है।

उनसे कहा जा सकता है कि अगर आप चूहे पर धीरे चलेंगे तो बैराज आगे निकल जाएगा और आप पीछे रह जाएंगे, ऐसे में आपको घर की देखभाल करनी चाहिए। योजना के अनुसार विष्णु जी के आमंत्रण पर गणेश जी वहां प्रकट हुए। उन्हें घर संभालने की जिम्मेदारी दी गई थी।

जब बारात घर से निकली और द्वार पर गणेश जी बैठे थे तो नारद जी ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि भगवान विष्णु ने उनका अपमान किया है। उसके बाद नारद जी ने गणेश जी को एक सुझाव दिया। गणपति ने सुझाव के तहत अपनी चूहों की सेना को जुलूस के आगे भेजा, जिसने पूरे रास्ते को खोद डाला। इससे देवताओं के रथों के पहिए रास्तों में फंस गए।

जुलूस आगे नहीं बढ़ पाया। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए तब नारद जी ने गणेश जी को बुलाने का उपाय बताया जिससे देवताओं के विघ्न दूर हो जाएं। भगवान शिव की आज्ञा से नंदी गजानन को लेकर आए। देवताओं ने गणेश जी की आराधना की तब रथ के पहिए गड्ढों से निकले लेकिन कई पहिए टूट गए।

तब उनके पास में ही एक लोहार काम कर रहा था अपने काम को शुरू करने से पहले उन्होंने भगवान गणेश को सच्चे दिल से याद किया और तुरंत ही सभी रथों के पहियों को ठीक कर दिया। उन्होंने देवताओं से कहा कि ऐसा लगता है कि आप सभी ने शुभ कार्य

pdfinbox.com

शुरू करने से पहले विघ्नहर्ता गणेश की पूजा नहीं की है, इसलिए ऐसा संकट आया है। आप सभी गणेश जी का ध्यान करके आगे बढ़ें, आपके सभी काम बनेंगे।

pdfinbox.com

pdfinbox.com